दूसरा अध्याय

मानवतावाद स्वरूप एवं परिभाषा

द्वितीय अध्याय

* मानवतावाद स्वरूप एवं परिभाषा *

अ]. मानव और मानवता :-

मानव का संबंध मानव हृदय से ही है। मानवता मानव हृदय का उदात्त अंश है। मानव हृदय से ही उत्पन्न मानवता मानव को मानव बनाएँ रखती है। इस दृष्टि से मानव और मानवता का अन्योन्य संबंध है।

१. "मानव" शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ -

भारतीय मत के अनुसार मानव शब्द वैवस्वत मनु से संबंधित अथवा उससे उत्पन्न माना जाता है। मानव हिंदी कोश [चतुर्थ खंड] में मानव शब्द की व्याकरणिक व्युत्पत्ति इस प्रकार बतायी है -- मानव == वि [सं. मनु + अण] मनु. से संबंधित अथवा उससे उत्पन्न। इस प्रकार मानव का अर्थ व्यक्तिपरक [मनुष्य] और समूहपरक [मनुष्यजाति] बताया है। वेदों में निसर्गशक्ति का दिव्य और देवतात्मक स्वरूप मानव को ही माना है। उसे "पुरुष" संज्ञा से संबोधित किया है। 'देवताओं ने मनुष्य शरीर को अपने रहने का सर्वोत्तम साधन माना है और मनुष्य रूप में ही अपने को धारण किया है। मनुष्य में ईश्वरी अस्तित्व का भाव रहने के कारण मनुष्य जन्म दुर्लभ माना जाता है।[१] प्राचीन काल से आज तक मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है।

पाश्चात्य विचारकों ने भी मानव शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार मानी है।

अंग्रेजी [Human] शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन होमो [Homo] शब्द से है जिसका अर्थ है -- मानव।

२. मानवता - व्याकरणिक व्युत्पत्ति और अर्थ --

मानक हिंदी कोश [चतुर्थ खण्ड] के अनुसार मानवता शब्द की व्याकरणिक व्युत्पत्ति इस प्रकार बतायी गयी है ---

मानवता = स्त्री. [सं. मानव + तल + टाप्] अर्थात '१] मानवजाति २] मानव होने की अवस्था या भाव ३] मनुष्य के आदर्श तथा स्वाभाविक गुणों, भावनाओं आदि का प्रतीक या समूह।[2] उपर्युक्त अर्थ में मानवता को मनुष्य की सहज स्वाभाविक सद्वृत्ति माना गया है।

आधुनिक भारत में महात्मा गांधीजी ने मानवता को आध्यात्मिक और व्यावहारिक स्तर पर आचरित कर मानवता के विकास का दिशा निर्देशन व्यापक रूप में किया है। उनके विचारों से संपूर्ण मानवजाति की सेवा में ही मानवता है। इसलिए जब तक मनुष्य खुद के बारे में सोचता है, जानवर जैसा ही है। जैसे जैसे वह कुटुम्ब, समाज और देशहित के बारे में सोचता है, श्रेष्ठ बनता है। लेकिन जब वह मानव-मात्र को अपना कुटुम्ब मानता है तब वह पूर्ण मानव बन सकता है।[3] अर्थात "स्व" की सीमा से हटकर विश्व की परिधि तक पहुँचना, पशुसामान्य धरातल से ऊपर उठाना है। यही मनुष्य की मानवता है।

भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा से व्यक्त मानवता संबंधी विचारों से मानवता का एक क्रमिक विकास दिखायी देता है। मानवता का केंद्रबिंदु, व्यक्ति [मानव] है और उसकी सर्वोच्च परिधि विश्व -मानव है। मानवता का प्रारंभ व्यक्ति से होता है। व्यक्ति के चिन्तन, मनन, संस्कार और सदाचार का परिष्करण मानवता है। व्यक्ति का निकटतम संस्कार प्रथमत: उसके परिवार से होता है। माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी [पति], संतान आदि से उसका खून का रिश्ता होता है और इस संबंध से उसका संबंध बढ़ जाता है। यह मानवता की पहली सीढ़ी है। परिवार के अनन्तर उसका संबंध समाज से स्थापित हो जाता है, क्यों कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज दोनों का अस्तित्व उपरी तौर से अलग-अलग दिखायी देता है, लेकिन दोनों में अन्योन्य संबंध है, दोनों परस्परावलंबी है। व्यक्ति समाज का दायित्व स्वीकारता है और समाज व्यक्ति के कार्य को आगे बढ़ाता है। यह अन्योन्य संबंध अर्थात मानवता पर ही मुख्यतया निर्भर रहता है। समाज के उपरांत व्यक्ति का सम्बन्ध राष्ट्र से जुड जाता है। राष्ट्र एक ऐसी संकल्पना है, जो किसी विशिष्ठ भूप्रदेश से संबंधित विशिष्ठ समाज, विशिष्ट भाषा, विशिष्ट लोकाचार एवं विशिष्ट शासन प्रणाली से अभिभूत होती है। राष्ट्र के प्रति व्यक्ति का जो सौहार्द संबंध स्थापित होता है और कर्तव्य भावना जागृत है, वही राष्ट्रीयता को जन्म देती है और यह राष्ट्रीयता ही मानवता का एक महत्पूर्ण अंग बन जाती है।

राष्ट्र से बढ़कर और एक बहुत लम्बी सीमा देखी जाती है, जो विश्व परिधि में व्याप्त होती है। मानव का विश्वप्रेम उसकी मानवता की सर्वोच्च उपलब्धि है। यहाँ तक पहुँच कर मानव मानव में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता। वह जाति, वर्ण, धर्म, राष्ट्र सभी परिधियों को पार करता हुआ मानव मानव में समता, बंधुत्व और विश्व एकता साध्य करता है, तब वह व्यक्ति व्यक्ति न रहकर विश्वमानव बन जाता है, वह विश्व का बन जाता है और विश्व उसका। यही अद्वैत मानवता का चरम विकास है।[4] यह बात निम्नांकित मान-चित्र से स्पष्ट की जा सकती है —

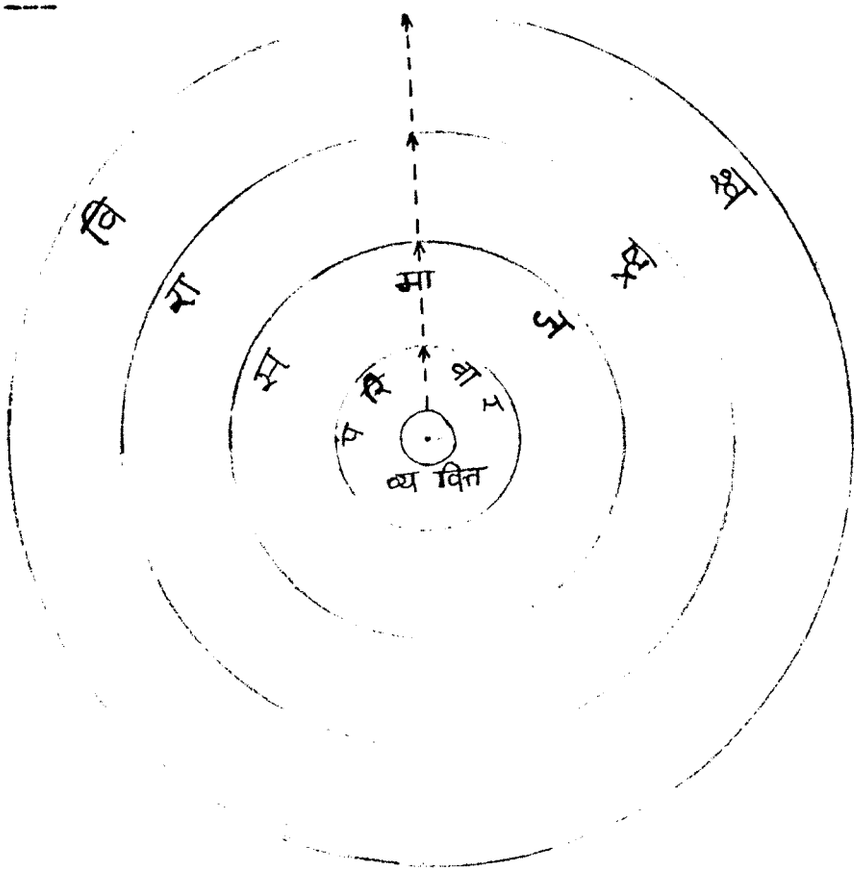

मानवता का क्रमिक विकास

उपर्युक्त मानचित्र से यह बात निःसंदेह रूप से कही जाती है कि मानवता का विकास व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से विश्व तक क्रम से हो जाता है। मानचित्र के एक के बाद एक बढ़ने वाले वृत्त मानवता के विकास के सोपान है। ये वृत्त मानवता के आंतरिक संबंध के कारण ही जुड़े हुए हैं। ये वृत्त मानवता के कारण ही परस्पर हित संबंध के पूरक बने हैं; व्यक्ति से निकल कर मानवता उत्तरोत्तर व्यापक और विशाल बनता जाती है।

संक्षेप में, भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार मानवता का लक्ष्य है —— मानव जाति को एक सूत्र में बांधना, व्यक्ति से लेकर विश्व तक एकात्मता स्थापित करना। मानवता की सिध्दि है मनुष्य को पशु सामान्य धरातल से उपर उठाकर उन्नयन और उत्थान की ओर ले जाना।

[ब] मानवतावाद - अर्थबोध और- अर्थ-विस्तार

१. मानवतावाद का अर्थ :-

आज मानव को मानव न मानकर उसे शेष सब कुछ माना जा रहा है। परन्तु मानव सबसे पहले मनुष्य है। जिस तरह औद्योगीकरण में मनुष्य की कोई स्थिति नहीं है उसी प्रकार नगर में मनुष्य की गणना जनसंख्या में वृध्दि के रूप में मानी जाती है। हम जब किसी विषय पर विचार करते है या किसी समस्या का समाधान खोजते है तो आदमी की संख्या तो दिमाग में रहती है परन्तु यह ध्यान मे नहीं रहता कि "मनुष्य मनुष्य है"

पाश्चात्य जगत् का इतिहास हमें बताता है कि एक समय था जब पश्चिम में परलोक के जीवन की प्रधानता थी और मनुष्य का वर्तमान जीवन परलोक की भावना से नियन्त्रित था। कालान्तर में यूरोप की जनता केवल परलोक की बातों से सन्तुष्ट नहीं हुई, अत: वह इहलोक की बातें चाहने लगी। इसीलिए नवजागरण सम्भव हुआ। १४ वीं से १६ वी शताब्दी के मध्य का काल यूरोप में पुनर्जागरण का काल कहा जाता है। इस काल में 'शिक्षा में मानवतावाद' ने जोर पकडा। यह शास्त्रीय मानवतावाद था।

औद्योगिकरण के फलस्वरूप पाश्चात्य देशों में मनुष्य को मशीन माना गया। वहाँ पर मनुष्य परेशान हो गया तो उसने विद्रोह किया। उसी विद्रोह की भावना की ध्वनि आधुनिक मानवतावाद की संज्ञा से संज्ञापित की गयी। नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के फलस्वरूप मनुष्य का क्रन्दन या चीख ही मानवतावाद कहलाया।[1]

मानवतावाद के अन्तर्गत मनुष्य का अस्तित्व स्वीकार किया गया है। मनुष्य ही सब कुछ है, वह किसी का प्रतीक मात्र नहीं है। उसकी वैयक्तिकता पहचानी जा सकती है।

मानवतावाद का मानव-चलता-फिरता नजर आ रहा है। मानवतावाद में मनुष्य कल्पना ओं मे नहीं बाह्य जगत् में अस्तित्वान् है। उसमें विचार, आकांक्षा एवं भावनाएँ है। विज्ञान की कुछ विकृतियों में एक विकृति है 'मानकीकरण'। खाने पीने का ढंग, खाना बनाने का ढंग, बालों की कटिंग, कपड़े पहनने के तरीके में रहते-रहते मनुष्य परेशान-सा हो जाता है।[6] आज आधुनिक विज्ञान ने मनुष्य को परेशान कर रखा है। उसकी सारी चीज मानक होती जा रही है, जैसे भोजन करने के तरीके भी मानक हो गये है। वह मेज-कुर्सी पर भोजन करता है। यह शैली मानक होती जा रही है। मानवतावाद इस एक समान नीरसता के विरुद्ध है और वैयक्तिकता को महत्व देता है।

कोई मनुष्य दुखी है तो कोई सुखी है। परन्तु उसकी गणना आज एक संख्या के रूप में मानी जाती है। आज का मनुष्य परेशान है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद देखा जाय तो मानव प्रत्येक क्षण दु:खी प्रतीत होता है। मनुष्य की इसी दु:खपूर्ण स्थिति को देखकर कुछ दार्शनिकों का मन दया से द्रवित हो गया और उन्होने दीन-दुखियों की सेवा करने को मानव-जीवन का चरम लक्ष्य घोषित किया। इस स्थिति में मानवतावाद को झलक मिलती है। मानवतावादी विचारक मानव को दु:खो से छुटकारा देने का उपाय ढूँढता है, दु:ख के कारणों पर विचार करता है और कुछ समाधान प्रस्तुत करता है। इस प्रकार वह मनुष्य को इस भीड़भाड़युक्त संसार में भी अकेला देखता है और उसमें निराशा, कुण्ठा, संत्रास, चिन्ता आदि को देखकर मनुष्य की दयनीय स्थिति पर विचार करने लगता है। यह विचार मानवतावादी विचार है। मैसलो के अनुसार "मानवतावाद एक ऐसा शब्द है जो विभिन्न लेखकों द्वारा विभिन्न अर्थों मे प्रस्तुत किया गया है। इनमें से एक में यह अर्थ निहित है कि मनुष्य मानव-विचार की समस्त पृष्ठभूमि है, ईश्वर नहीं है कोई अतिमानवीय वास्तविकता नही है जिस से मनुष्य को जोड़ा जा सके।[7] मैसलो के मतानुसार मानवतावाद एकदम नई तथा क्रान्तिकारी विचारधारा है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मानवतावाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें मानवता को प्रधानता दी जाती है और जिसके अन्तर्गत समाज की प्रत्येक प्रक्रिया की व्याख्या एवं मूल्यांकन इस दृष्टिकोण से किया जाता है कि वह कहाँ तक मानवीय हितों से सम्बन्धित है। जहाँ व्यक्ति के स्वयं के विकास, सुख तथा आत्म-अनुभूति पर बल दिया जाता है वही मानवतावाद का जन्म होता है।

मानवतावाद के अर्थबोध और अर्थविस्तार संबंधी सुनिश्चित जानकारी अंग्रेजी विश्वकोशों और शब्दकोशों मे प्राप्त होती है। एनसायक्लोपीडिया ऑफ सोशल सायन्सेस [खण्ड ७-८] में "ह्यूमेनिटेरिनिज्म" [Humanitarianism] शब्द को अर्थ मानवतावाद दिया गया है। फिर भी Humanism शब्द ही अधिकतर मानवतावाद के अर्थ में प्रचलित है। भारतीय साहित्य में मानवतावाद के लिए ह्यूमैनिज्म [Humanism] और मानवतावादी के लिए ह्यूमैनिस्ट [Humanist] शब्दों का प्रयोग ही रूढ हो गया है।

२. मानवतावाद - अर्थविस्तार :-

मानवतावाद एक विकासशील विचारधारा है। मानवतावाद धर्म के क्षेत्र में एक दर्शन है, राजनीति में विचार प्रवाह है, समाज में सिध्दान्त है तो साहित्य में आदर्श चिंतनप्रणाली है। युगीन संदर्भों के अनुसार मानवतावाद के अर्थबोध में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि परिस्थितियों के कारण परिवर्तन होता आया है। यह परिवर्तन ही एक तरह से मानवतावाद का अर्थ विस्तार है।

प्राचीन भारतीय और प्राचीन पाश्चात्य परंपरा में आरंभ में मानवतावाद में धार्मिक तथा अध्यात्मिक संदर्भ पर ही अधिक बल दिया हुआ जान पडता है। इस दृष्टि से ईश्वरी अस्तित्व को मानना, उसे पाने के लिए पूजा-प्रार्थना, जपतप, यज्ञयाग, दानधर्म, श्रवणकीर्तन, सत्संग आदि साधनों को अपनाना और अंत में ईश्वर सेवा द्वारा मोक्ष या मुक्ति का ध्येय रखना मानवतावाद के अर्थ में उचित समझा जाता था। भक्ति तथा अध्यात्मिक चिंतन में करुणा, दया, अहिंसा, त्याग, संयम आदि मौलिक वृत्तियों को आदर्श माना जाता था। लेकिन जैसे ही विज्ञान का विकास हुआ, १८ वी १९ वी शताब्दी मे पश्चिमी चिंतको ने मानवतावाद को चिंतन और आचरण के सुनिश्चित नींव पर प्रतिष्ठित किया।

मनुष्य ईश्वर की उत्पत्ति नहीं, वह प्रकृति के विकास प्रक्रिया की चरम परिणाति है, यह विकासवाद का सत्य उद्घटित हुआ, तब ईश्वरी अस्तित्व को नकारा जाने लगा। दलित, पीडितों के प्रति संवेदनाभाव, दया करुणा भाव, भ्रातृभाव जागृत होता गया और मनुष्य सेवा ही ईश्वर सेवा है इस मंत्र का उद्घोष हुआ। इस प्रकार मनुष्य को पारलौकिक जगत की अपेक्षा इसी लोक में सुखी और समृद्ध बनाने की कल्पना पर बल दिया जाने लगा। धार्मिक क्षेत्र की अंधश्रद्धा, अंधरुढियाँ, सामाजिक क्षेत्र मे

व्याप्त वर्णभेद, जातिभेद आदि को नष्ट कर समभाव रखने की दृष्टि आती गयी। मानवहित की रक्षा के लिए शिक्षा संस्थाएँ, आरोग्य संस्थाएँ आदि का निर्माण मानवतावाद के अर्थ विस्तार का ही द्योतक है।

वेश्या, विधवा, दास, अपराधी आदि उपेक्षितों के प्रति सहानुभूतिभाव रखकर उनके पुनर्वसन की योजनाएँ मानवतावाद का ही प्रकटन है।

राजनीति में समाजवाद, साम्यवाद, शांतिवाद, लाने की दृष्टि से युद्ध और साम्राज्यवाद का निषेध मानवतावाद का ही संवरण है। आर्थिक क्षेत्र में औद्योगिकता के कारण वर्गवैषम्य को मिटाने के प्रयास मानवतावाद की ही परिणति है।

नैतिक दृष्टि से मानवेतर प्राणियों की ओर करुणा दयाभाव से देखकर उनकी हत्या, बलिप्रथा पर कानूनी निर्बंध लगाना, सौंदर्य बोध और आत्मौपम्य दृष्टि रखकर उनकी सुरक्षा करना मानवतावाद की ही प्रेरणा है।

मानवतावाद के अर्थ की सर्वोच्च फलश्रुति इसमें है कि व्यष्टि मानव से लेकर समष्टिमानव की मंगलाकांक्षा के लिए अपने आपको दलित द्राक्षा की भाँति बिखेड देना। इस दृष्टि से साहित्य द्वारा विश्वबंधुत्व, मानवकल्याण, समता, एकता, सर्वभूतहित की भावना को प्रकट करना मानवतावाद के विशाल अर्थ सीमा को ही प्रकट करना है मानवतावाद के विशाल अर्थसीमा को ही प्रकट करना है।

इस मानवतावाद का अर्थबोध और अर्थविस्तार एकांगी नहीं है। उसमें मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि, और आत्मा के सर्वांगीण विकास का अर्थ अनुस्यूत है। उसमें स्थूल से लेकर सूक्ष्मतम तक, भौतिक से लेकर अध्यात्म तक, जड़ से लेकर चैतन्य तक तादात्म्य भाव का संवरण हुआ है।

[क] मानवतावाद की परिभाषा -

परिवर्तनशील और गतिशील मानव जीवन में मानवतावाद को व्याख्याबद्ध करणा सहज शक्य नहीं है। मानवतावाद को परिभाषित करते समय मुख्य रूप से मनुष्य की मौलिक वृत्तियों को ही प्रधानता दी गई है। मनुष्य की विविध सद्वृत्तियों का उल्लेख कर मानवतावाद को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय प्राचीन साहित्य में मानवतावाद को "वाद " के रूप में शब्दबद्ध नहीं किया गया है। लेकिन भारत की अध्यात्मिक परंपरा के अनुसार साहित्य में मानवतावादी विचारों को व्यक्त करते वक्त सहृदयता, समता, सामंजस्य, दान, दया करुणा, सच्चरित्रता, संयम, त्याग आदि विविध सद्वृत्तियों का महत्व स्वीकार किया गया है। ऋग्वेद का समभाव[8] और कठोपनिषद का शांतिपाठ[9] मानवतावाद के ही उत्कृष्ट उदाहरण है।

डॉ. देवेश ठाकुर ने मानवतावाद को दर्शन के रूप में अपना कर उसके अंतर्गत मानवीय संवेदना का उदात्तीकरण तथा असीमित विस्तार पर बल दिया है। न केवल मानव बल्कि मानवेत्तर प्राणियों के प्रति भी सहयोग, और मंगलभाव की प्रतिष्ठापना उन्होंने मानवतावाद के अंतर्गत मानी है।[10]

डॉ. सच्चिदानंद राय ने मानवतावाद को जनवादी और समाजवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत रखा है। उन्होंने मनुष्य की असंख्य सद्वृत्तियों में विश्वास प्रकट किया है।[11]

डॉ. सुरेश सिन्हा ने मानवतावाद को मानव जीवन की समग्रता के मूल्य रूप में स्वीकार किया है। उनका कथन है --- " व्यक्तिगत स्तर पर मानवजाति का सार्वभौमिक अनुभव ही मानवपूर्णता का वास्तविक मूल्य है और यही मानवतावाद का चरम उद्देश भी।"[12]

नवलकिशोरजी ने मानवतावाद का उदार धार्मिक भावना का पर्याय मान कर उसमें मौलिक सद्वृत्ति में आस्था नैतिक विवेक, विश्व प्रेम और विश्व बन्धुत्व की प्रतिष्ठा आदि बातों को महत्व दिया गया है।[13]

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य में मानवतावाद एक आदर्श विचारधारा है और उसका विकास व्यावहारिक स्तर पर करना आवश्यक है।

पाश्चात्य विद्वानों ने मानवतावाद की परिभाषा धर्म, नीति, तथा समाज के आधार पर स्थापित करने का प्रयास किया है। पाश्चात्य धार्मिक प्राचीन ग्रंथों में [बायबल, कुरान, अवेस्ता] मानवतावाद की निश्चित परिभाषा नहीं दी गई है फिर भी प्रेम, सदाचार, न्यायप्रियता, करुणा आदि सद्गुणों का स्वीकार किया है, जो मानवतावाद की ही परिपुष्टि करते हैं।

"एनसायक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स" के अनुसार मनुष्य के बीच एकता साहचर्य तथा विश्वबन्धु के भाव को प्रमुखता देकर अन्य सजीव प्राणियों के साथ भी उसी प्रकार आचरण करना मानवतावाद है। मनुष्य-मात्र ही इसके सहानुभूति का विषय नहीं है, वरन समस्त जीव-जगत इसका पात्र है। मानवतावाद के अंतर्गत मानव प्रेम और जीवदया दोनों का समावेश है।"[14]

"एनसायक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेस" में मानवतावाद को उपर्युक्त धार्मिक नैतिक पृष्ठभूमि के साथ सामाजिक पृष्ठभूमि पर भी परिभाषित करने का प्रयास किया है। इसके अनुसार मानवतावाद में पीड़ित जीवों की पीड़ा को कम करने तथा उनके सुख में वृद्धि करने की अपेक्षा जो दुःखी है उन्हे सुखी बनाने की और प्रवृत्त होना अधिक उचित है।"[15]

मानवतावाद संबंधी भारतीय और पाश्चात्य परिभाषाओं से यह बात स्पष्ट होती है कि मनुष्य स्वभाव में ऐसा कुछ है कि वह दुसरे का दुःख नहीं देख सकता। यह उसकी सहज स्वाभाविक मूलप्रवृत्ति है। इस मूलप्रवृत्ति का सम्यक पोषण एवं संवर्धन करनेवाली सभी भावनाएँ तथा मानवजीवन के विकासक्रम में योग देनेवाली सभी क्रियाएँ मानवतावाद के अंतर्गत आती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर मानवतावाद की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है- मानवतावाद मनुष्य में निहित सहज, उदात्त प्रवृत्तिपरक मानवता को विशद करने की चिंतनप्रणाली है। यह चिंतनप्रणाली व्यक्ति से समष्टि तक विस्तारित रहती है। यह मनुष्य के विविध भावों, गुणों द्वारा व्यवहार में कार्यरत रहती है। यह केवल मानव-मानव के बीच संवेदनात्मक दृष्टी निर्माण करती है, बल्कि मानवेतर प्राणियों के प्रति भी संवेदनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर मानव और मानवेतर प्राणियों के बीच परस्पर सौहार्द की स्थिति का निर्माण कर लौकिक जगत में ही आत्मा के एकत्व की अनुभूति करा देती है।

इस प्रकार मानवतावाद एक ऐसी सार्वदेशीय, शाश्वत और व्यापक चिंतनप्रणाली है जिस में आस्था का स्वर हमेशा सर्व हित की कामना का साथ लेकर गुँजता रहता है।

[ड] मानवतावाद का स्वरुप --

मानवजाति के उचित अध्ययन का विषय मानव ही है। विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति सभी क्षेत्र मानव की इच्छा-आकांक्षाओं की ही अभिव्यक्ति है। मानवतावाद इन सभी से संबंधित आदर्श चिंतन पद्धति है। इस दृष्टि से इसका स्वरुप स्पष्ट करने के लिए मनुष्य के आचरण का अध्ययन आवश्यक है। इसलिए मानवतावाद में मनुष्य की वृत्तियों, उसकी

शारीरिक, मानसिक हलचलों आदि का सूक्ष्म और सुस्पष्ट अध्ययन विज्ञान द्वारा ही संभव है। इस दृष्टि से मानवतावाद के स्वरूप निधारण में उसका ज्ञानविज्ञान की अनेक शाखाओं से संबंध और तुलना अवश्यभावी है।

१] मानवविज्ञान और मानवतावाद --

मानवविज्ञान मानव के उद्भव और विकास का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है और इस दृष्टि से उसका संबंध मानवतावाद से दिखायी देता है। मानवतावाद में विश्वबन्धुत्व की सच्ची भावना के विकास के लिए मानव विज्ञान सहायक बन सकता है। मानवविज्ञान में मानव की प्रत्येक प्रजाति और समूह की सांस्कृतिक विविधता के समन्वय से ही विश्वबंधुत्व साकार हो सकता है। इस दृष्टि से मानवतावाद में हृदय की विशालता तथा विचारों की उदारता प्राप्त करने में मानव विज्ञान कुछ हदतक सहायक बन सकता है।

२] शरीरविज्ञान और मानवतावाद ---

मानव का शारीरिक अस्तित्व मानवतावाद में निरसंदेह रूप में अपनाया गया है। मानवतावाद का यह महत्त्वपूर्ण तत्त्व रहा है कि जब तक मनुष्य शरीरधारी प्राणी है दुःख तब तक ही उसको दैन्य शोषण से मुक्ति करना और सुखशांति प्रदान करना आवश्यक है। शरीरविज्ञान मानव की शारीरिक रचना तथा अवयवों की क्रिया-प्रतिक्रियाओं का शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। लेकिन इन्ही क्रिया प्रतिक्रियाओं द्वारा मानवतावाद के आंतरिक भाव, दुःख, आनंद, शोक, क्रोध, आदि प्रकट होते है, जिससे मनुष्य की भावात्मकता व्यक्त होती है। इन भावात्मक अभिव्यक्ति में शारीरिक संरचना का विशेष योगदान रहा है। इस दृष्टि से शरीर विज्ञान और मानवतावाद का संबंध है।

३] मनोविज्ञान और मानवतावाद --

मनोविज्ञान और मानवतावाद दोनों के अध्ययन का विषय मानव और उसका कार्यव्यापार ही है। मनोविज्ञान में संवेदना, भाव, आवेग, स्मृति, इच्छा, चेतना आदि मानसिक वृत्तियों का शास्त्रीय एवं ज्ञानात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है मनोविज्ञान में मानव आचरण में शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का परस्पर संबंध खोजने का प्रयास किया जाता है। मानवतावाद की दृष्टि से मनुष्य के आचरण के पीछे उसके आंतरिक वृत्तियों का भावावेगों का जो मंथन या आंदोलन है उसे स्पष्ट करने के लिए मनोविज्ञान सहायक बन सकता है। इसके सहारे मानव आचरण में सामाजिक तथा नैतिक संदर्भ देखे जा सकते है।

13216

४] समाजविज्ञान और मानवतावाद ---

मानवतावाद में सामाजिक संगठन, सामाजिक परम्परा, उसकी सभ्यता, तथा संस्कृति आदि का परामर्श अवश्य ही लिया जाता है। समाजविज्ञान में इस दृष्टि से मनुष्य का स्वभाव, समाजनिर्माण में सहयोग, समाज विकास आदि का अध्ययन समष्टिगत दृष्टिकोण से किया जाता है। इसप्रकार समाजविज्ञान मानवतावाद का समष्टिगत दृष्टिकोण परिपुष्ट करने में सहायक होता है।

५] राजनीतिशास्त्र और मानवतावाद ---

राजनीतिशास्त्र में राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद, साम्राज्यवाद आदि विविध राज्यशासन व्यवस्थाओं का सुसम्बन्ध विवेचन रहता है। मानवतावाद में राजनीतिशास्त्र की प्रजातंत्र व्यवस्था आदर्श मानी जाती है। स्वातंत्र्य, समता, विश्वबन्धुता इन मंगलसूत्रों का अर्थ विवेचन राजनीतिशास्त्र में रहता है। इस दृष्टि से मानवतावाद का राजनीतिशास्त्र से निकट संबंध है।

६] धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म तथा मानवतावाद --

मानवतावाद में अध्यात्मिक पक्ष की दृष्टि से धर्म दर्शन तथा नीतिशास्त्र का निकटतम संबंध है। धर्म ऐसा सनातन और सामाजिक तत्त्व है जिससे मनुष्य की उन्नति और कल्याण की भावना विहित है। धर्म मानव जीवन में एकता लाने का योगदान देता है। धर्म मानव जीवन में एकता लाने का योगदान देता है। धर्म मनुष्य के अंतरंग की चीज है। धर्म केवल ईश्वरी अस्तित्व, मूर्तिपूजा, ध्यानधारणा, उपासना पद्धति का ही रूप नहीं वह मनुष्य की आत्मा की आस्था का रूप है। इसलिए हर एक की धर्म संबंधी कल्पनाओं में विभिन्नता है। धर्मशास्त्र के समान दर्शनशास्त्र का भी मानवतावाद से संबंध दिखाई देता है। दर्शनशास्त्र में बौद्धिक चिंतन-मनन के आधार पर मन, आत्मा, जीव, जगत, माया, ब्रह्म आदि विश्व के गूढ रहस्यों को उद्घाटित किया जाता है। मानवतावाद में दार्शनिक वादों का महत्त्व रहा है क्यों कि आत्मा के एकत्व की बात पर दोनों का मतैक्य है।

नीतिशास्त्र में मानव के आचरण पर विचार करते हुए पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा आदि का विचार होता है जिससे मनुष्य अवनति से बचता है और उचित मार्ग पर अग्रसर होता है। इस प्रकार मानव एकता आत्मा का एकत्व तथा सदाचार का समर्थन करनेवाला धर्म, दर्शन, नीति का

संबंध मानवतावाद के मानवमंगल के उद्देश से ही मिलता-जुलता है। यद्यपि शास्त्रों में इन बातों की ज्ञानात्मक स्तर पर चर्चा होती है, मानवतावाद में इसे भावात्मक स्तर पर स्वीकार किया जाता है।

७] सौंदर्यशास्त्र और मानवतावाद ---

सौंदर्यशास्त्र और मानवतावाद दोनों में अनुभूति और संवेदना प्रधान रहती है। सौंदर्यशास्त्र में ललितकलाओं को के सौंदर्यविषयक अनुभूति उचित मात्रा में ग्रहण कर आनन्दोपलब्धि के बारे में जानकारी मिलती है। सौंदर्यबोध मानवतावाद की सहज उत्क्रांत प्रक्रिया है। सौंदर्य का आस्वादन करना और आनन्द की प्राप्ति करना मानवतावाद का महत्त्वपूर्ण अंग है। इस प्रकार मनुष्य की सौंदर्य दृष्टि व्यापक बनाने में सौंदर्यशास्त्र मानवता के लिए सहायक बन गया है।

इनके अतिरिक्त मानवतावाद अर्थशास्त्र, शिक्षा से भी संबंधित है। अर्थशास्त्र के उत्पादन-उपभोग, वितरण-विनिमय आदि के सिद्धांतों के कारण समाज व्यवस्था की विषमता संबंधी विचार होता है जिससे समाज के समृद्धि पर भी विचार किया जाता है। सामाजिक हित को दृष्टि रखनेवाले मानवतावाद में अर्थशास्त्र उपयुक्त बनता है। शिक्षा द्वारा समाज को प्रबुद्ध कर ज्ञान, विज्ञान, सुसंस्कार का प्रसार करना मानवतावादी कार्य का ही एक अंग है। इस दृष्टि से शिक्षाशास्त्र भी मानवतावाद के स्वरूप निर्धारण में सहायक बन गया है।

संक्षेप में, मानवतावाद के स्वरूप निर्धारण में विज्ञान की अनेक शाखा प्रशाखाओं का सहभाग है। मानवतावाद में विज्ञान के ज्ञानात्मक संगठन को भावात्मक रूप में अपनाया गया है।

संपूर्ण विश्वसाहित्य में मानवतावाद से युक्त साहित्य ही अक्षय और अमर रहता है। साहित्य-विश्व में युगानुसार जितनी भी विचारधाराएँ या वाद निर्माण हुए है, ये मानवतावाद के व्यापक क्षेत्र के अंग ही है। मानवतावाद की व्यापकता निर्धारित करते समय उसकी अन्य साहित्यिक वादों से तुलना और अन्योन्य संबंध का विवेचन एक आवश्यक सोपान है।

८] राष्ट्रवाद और मानवतावाद ---

राष्ट्रवाद वह सिद्धांत है जिसमें अपने राष्ट्र के ही हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है। राष्ट्र संज्ञा किसी एक राज्य, देश या भूभाग तथा उस में बसनेवाले जनसमुदाय को दी जाती है।[१६] मानवतावाद के अंतर्गत संपूर्ण विश्व तथा विश्वपरिधि में आनेवाले मानव तथा मानवेत्तर प्राणियों के हित की बात आती है। यही मुख्य फर्क राष्ट्रवाद और

मानवतावाद में दिखायी देता है। शुद्ध राष्ट्रवाद और मानवतावाद दोनों में मानव-कल्याण के लिए त्याग, सेवा, गौरव, स्वाभिमान, समृद्धि भक्ति, निष्ठा, कल्याणभाव आदि भावनाएँ समान है। राष्ट्रवाद में इसकी प्रतिष्ठापना केवल राष्ट्र की रक्षा या भलाई के लिए की जाती है, तो मानवतावाद में विश्वस्तर पर अपनायी जाती है। राष्ट्रवाद अपने ही देश मे इतिहास, अपनी संस्कृति, अपने ही धर्म, अपनी ही भाषा तक सीमित है। राष्ट्रवाद का संगठन राष्ट्र के अंतर्गत ही है। परस्पर एकता, सौहार्दता का भाव राष्ट्र के लोगों तक ही परिबध्द है। इस सीमाबध्दता के कारण राष्ट्रवाद में में कभी कभी दूसरे देशों की स्वतंत्रता पर बंधन आ सकता है। सत्ता, अहंभाव, स्वार्थ की सीमा बढने से अंतर्गत कलह, युध्द, रक्तपात आदि हिंसात्मक मार्गोंका भी अनुसरण किया जा सकता है। लेकिन मानवतावाद का विस्तार विश्वपरिधि तक है। उसमें वह मानव-एकता, मानव-मानवेतर प्राणियों की सुख-समृद्धि, संपूर्ण मानव जाति में परस्पर सहयोग, समभाव, सबके लिए त्याग और सेवा आदि व्यापक स्तर पर आधारित किये जाते है। इस दृष्टि से राष्ट्रवाद मानवतावादे के पहले की सीढ़ी है। राष्ट्रवाद के ऊपर का सोपान मानवतावाद है------

९] आदर्शवाद और मानवतावाद ----

व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में उच्चतर मूल्यों की स्थापना कर व्यक्ति को अवनति या पथभ्रष्टता से बचाना सदाचार और सद्विचार में प्रवृत्त करना और, सात्विक जीवन निर्वाह के लिए प्रेरणा बनना इन उद्देश्यों की दृष्टि से मानवतावाद और आदर्शवाद में कोई अंतर नही है। लेकिन मानवतावाद में केवल मानव के भावजगत् के बारे में नही सोचा है। मानवतावाद मानवेतर प्राणियों की पीड़ा के प्रति भी संवेदना जागृत करता है। इस प्रकार नैसर्गिक करूणा, संवेदना, औदार्य की प्रवृत्तियों के कारण मानवतावाद आदर्शवाद से पृथक और व्यापक बना है।

१०] यथार्थवाद और मानवतावाद ----

मानवतावाद के अनुसार यथार्थवाद में भी मानव जीवन का वैषम्य, वेदना, पीडा, शोषण, दमन दूर कर उसके समृद्ध जीवन के लिए प्रधानता दी जाती है। यथार्थवाद में तथ्यजगत् के बाहर की चिन्ता नहीं रहती यथार्थवाद में अतिरंजित तथा कल्पना को स्थान न होने के कारण उसमें यथार्थ के नाम पर अश्लीलता मांसलता, यौनसमस्या आदि का हू-ब-हू चित्रण किया जाता है। यथार्थवाद में पूँजिपति और सर्वहारा का संघर्ष है। यथार्थवादी राजनीति से संबंधित रहता है। यथार्थवाद में संघर्ष, हिंसा का भी अवलंब किया जा सकता है। मानवतावाद की दृष्टि से यथार्थवाद सामाजिक चिन्तन का चित्रण करने में सहायक है। मानवतावाद मनुष्य की आंतरिक जगत् से

सीधा

सीधा संपर्क स्थापित कर सभ्यता, शांति तथा हृदय परिवर्तन में अधिक विश्वास रखता है। इस दृष्टि से मानवतावाद भावना, सहृदयता से प्रेरित होकर समस्याओं के हित के बारे में सोचता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यथार्थवाद में व्यक्ति दुःख की पीड़ा प्रधान है, मानवतावाद में. समस्त जीवों की कल्याण कामना और मंगल भावना की कल्पना है। इस प्रकार यथार्थवाद और मानवतावाद एक दूसरे के पूरक है लेकिन दोनों की अभिव्यक्ति और क्षेत्रव्यापकता में अंतर है।

११] समाजवाद और मानववाद- -

समाजवाद [साम्यवाद] आधुनिक युग में राजनीति और साहित्य के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत या वाद बना हुआ है। विज्ञान और यांत्रिक विकास के कारण उत्पादन कर्ता और सर्वहारा ऐसे दोन वर्ग विभाजित हुए, जिसमें आर्थिक असमतोल के कारण वर्ग-संघर्ष बना रहा। समाजवाद इस वर्ग विषमता को हटा कर वर्ग-विहिन समाज रचना की निर्मिति पर बल देता है। आर्थिक समानता तथा श्रम की महत्ता की समस्या पर खडा समाजवाद क्रांति तथा संघर्ष को अपनाता है। मानवतावाद भी वर्ग-विहिनता को दूर कर समता, एकता लाने की दृष्टि से सोचता है, समाजहित के लिए प्रधानता देता है। लेकिन मानवतावाद हिंसा क्रांति को आव्हान नहीं करता। वह मनुष्य के सत्प्रवृत्तियों पर विश्वास रखकर सहृदयता और समझौते से समाज-हित चाहता है। उसमें बौद्धिकता, तर्क-वितर्कता, द्वंद्वात्मकता के स्थान पर आस्था, संयम और सौहार्द का भाव अधिक है। मानवतावाद केवल उत्पादनकर्ता और सर्वहारा वर्ग की कल्याण की कामना नहीं करता बल्कि संपूर्ण सृष्टि के प्रति मंगलभाव की अभिलाषा करता है। मानवतावाद व्यक्ति को केवल आर्थिक पीडा के बारे में न सोचकर अन्य सभी पीडाओं के प्रति भी संवेदनापूर्ण दृष्टि रखता है।

१२] अस्तित्ववाद और मानवतावाद ---

आधुनिक युग में अस्तित्ववाद एक स्वतंत्र दर्शन के रूप में हमारे सामने आता है। एक दर्शन के रूप मे अस्तित्ववाद का उदय भलेही प्रथम महायुद्ध के बाद जर्मन के संकट्ग्रस्त और विघटित परिवेश में हुआ हो, लेकिन अस्तित्ववादी चिंतन की परंपरा डेन्मार्क के कीर्के गार्द से मानी जाती है। सर्व प्रथम कीर्के गार्द ने अस्तित्व संबंधी यह मान्यता प्रकट की कि- "क्यों कि मेरा अस्तित्व है और क्योंकि मै सोचता हूं. इसलिए मै सोचता हूं कि मेरा अस्तित्व है।"[२७] कीर्के गार्द के अनुसार मानवतावादे के परिप्रेक्ष्य मे यह महत्त्वपूर्ण विचार है कि नैतिक तौर पर प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है वह पूर्ण मानव बने। कीर्के के पश्चात अस्तित्वादी चिंतक यास्पर्स ने इस जगत्

में मनुष्य क

में मनुष्य के अस्तित्व और स्वतंत्रता को महत्त्वपूर्ण माना।[28] अस्तित्ववादी धारा के चिंतकों में ज्यों पाल सार्त्र का नाम सर्वप्रमुख है। सार्त्र का कथन है कि मनुष्य दिक्काल में अपने निर्णयों द्वारा अपनी सारसत्ता का निर्माण करता है। यह स्वतंत्रता किसी द्वारा दी हुई चीज नहीं, मनुष्य स्वयं का निर्माता है, वह निर्मित रूप में कहीं नहीं मिलता, वह अपना निर्माण वरण की स्वतंत्रता द्वारा करता है। इस दृष्टि से अस्तित्ववाद का कुछ मात्रा में मानवतावाद से संबंध जरूर स्थापित हो सकता है क्यों कि अस्तित्ववादी दर्शन मनुष्य की स्वतंत्रता को अपनाता है, मनुष्य की स्वयं निर्णायक तत्त्व है यह सिद्ध करता है। मनुष्य की यह कर्तृत्वशक्ति, गरिमा मानव महिमा के निकट है।

संक्षेप में, मानवतावाद का स्वरूप विस्तार सर्व व्यापक है। एक विशाल और अथांग सागर के समान मानवतावाद सभी दर्शनों, सभी सिद्धांतो, सभी ज्ञान-विज्ञानों की शाखाओं, सभी वादों को अपने में समा लेता है। इसलिए मानवतावाद विश्व में सर्व-व्यापी है, सर्व-श्रेष्ठ है, सर्व-मंगलाकांक्षी है और सर्व-सदाचार की परिणति में समाहित है।

[इ] मानवतावाद की विशेषताएँ--

मानवतावाद के उपर्युक्त स्वरूप निर्धारण से मानवतावाद की कुछ विशेषताएँ और स्थापनाएँ सामने आती है, जो इस प्रकार है -- -

१. मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है।

२. मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्तियाँ शाश्वत है। फिर भी मनुष्य आहार निद्रा आदि पशुसुलभ वृत्तियों से ऊपर उठा हुआ प्राणी है।

३. मनुष्यता मनुष्य की शाश्वत वृत्ति है, जिसमें दूसरों के सुख-दुःख के साथ समवेदना का निर्माण सहजात है।

४. मानवतावाद एकांगी नहीं है। उसमें विज्ञान और अध्यात्म भौतिक एवं पारलौकिक यथार्थ और आदर्श का समन्वय है।

५. मानवतावाद धर्म के अंतर्गत ईश्वर को मानना या न मानना इन दोनों संकल्पनाओं को शामिल करता है और इन से ऊपर भी है।

६. मानवतावाद व्यक्तिपीड़ा तक ही सीमित नहीं है। मानवेतर पीड़ित प्राणियों के प्रति भी उसमें संवेदना का विस्तार है।

७. मानवतावाद में मानव की सत् प्रवृत्तियों का स्वीकार और असत् प्रवृत्तियों का विरोध अनस्यूत है।

८. मानवतावादी में सुसंस्कारिता का अनन्य महत्त्व है।

९. मानवतावाद सद्विचार और सदाचार का नैतिक मूल्य समझता है।

१०. मानवतावाद अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में विकासात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है।

११. मानवतावाद में जीवन-विवेक, और सौंदर्य बोध की भावना को सम्यक रूप से अपनाया जाता है।

१२. उपेक्षित, दलित, पीड़ित मनुष्य तथा प्राणी की सेवा करना मानवतावाद में-चरम समझा जाता है।

१३. मानवतावाद जड़ से लेकर चेतन तक आत्मौपम्य दृष्टि रखता है।

१४. मानवतावाद अन्याय का विरोध सामंजस्य के तरीके से चाहता है। अन्याय के विरोध में अंतिम मार्ग युद्ध, हिंसा, क्रांति का स्थान मानवतावाद में जरूर है।

१५. मानवतावाद में व्यष्टिचित्त की उदात्त संवेदना का विस्तार व्यष्टि से लेकर संपूर्ण विश्वमानव तक पहुँचता है।

१६. समष्टिहित की रक्षा उसका सर्व प्रकार से मंगल, दुर्गति से बचाव और अंत में चिन्मुख विकास मानवतावाद का परमोच्च बिंदु है।

१७. करुणा, सच्चरित्रता, संयम, त्याग, विवेक, श्रद्धा, तप, श्रेष्ठ मानवतावादी गुण रहे है।

१८. मानवतावाद इतना सरल है कि उसे एक बालक भी समझ सकता है और एक प्रबुद्ध दार्शनिक भी।

१९. विश्वशांति, विश्वप्रेम, विश्वबन्धुत्व से मानवतावाद में "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव निरंतर जागृत रखने का प्रयास रहता है।

२०. मानवतावाद व्यक्ति, परिवार, समाज की सीमाओं को लांघकर मानव के न्यायोचित समाष्टिगत विकास की ओर अग्रसर होता है तो उसकी परिणति विश्वधर्म में होती है।

[ई] निष्कर्ष :-

भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार मानवता का लक्ष्य है मानव जाति को एकसूत्र में बांधना, व्यक्ति से लेकर विश्व तक एकात्मता स्थापित करना। मानवता की सिद्धि है मनुष्य को पशुसामान्य धरातल से ऊपर उठाकर उन्नयन और उत्थान की ओर ले जाना।

मानवतावाद के अर्थ की सर्वोच्च फलश्रुति इसमें है कि व्यष्टि मानव से लेकर समष्टि मानव की मंगलकांक्षा के लिए अपने आपको दलित द्राक्ष्य की भाँति निचोड़ देना। इस दृष्टि से साहित्य द्वारा विश्वबंधुत्त्व, मानव कल्याण, समता, एकता, सर्वभूतहित की भावना को प्रकट करता मानवतावाद के विशाल अर्थ सीमा को ही प्रकट करना है।

इस प्रकार मानवतावाद का अर्थबोध और अर्थविस्तार एकांगी नहीं है। उसमें मनुष्य के शरीर मन बुद्धि और आत्मा के सर्वांगीण विकास का अर्थ अनुस्यूत है। उसमें स्थूल से लेकर सूक्ष्म तक, भौतिक से लेकर अध्यात्म तक, जड़ से लेकर चैतन्य तक तादात्म्य भाव का संवरण हुआ है।

इस प्रकार मानवतावाद एक ऐसी सार्वदेशीय, शाश्वत और व्यापक चिंतन प्रणाली है जिसमें आस्था का स्वर हमेशा सर्व हित की कामना का साथ लेकर गुंजता रहता है।

संक्षेप में, मानवतावाद का स्वरूप विस्तार सर्व व्यापक है। एक विशाल और अथांग सागर के समान मानवतावाद सभी दर्शनों, सभी सिद्धांतों, सभी ज्ञान-विज्ञानों की शाखाओं, सभी वादों को अपने में समा लेता है। इसलिए मानवतावाद विश्व में सर्वव्यापी है, सर्व-श्रेष्ठ है, सर्व-मंगलाकांक्षी है और सर्व सदाचार की परिणति में समाहत है।

----- o -- -----

* संदर्भ सूची *

१. जगदग्नि : " मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य का अनुशिलन।" पृ. २८

२. तदैव । पृष्ठ २८

३. तदैव । पृष्ठ २९

४. तदैव । पृष्ठ ३०

५. डॉ. रामशकल पाण्डेय : 'शिक्षा दर्शन' - पृ ३५७

६. तदैव । पृ. ३५७.

७. तदैव । पृ. ३५७

८. श्री. दा. सातवेलकर : "श्रगवेद संहिता" पृ. - ७६०

९. प्र. मोतीलाल बनारसीदास : "एकादशोपनिषद" पृ. २६

१०. डॉ. देवेश ठाकुर : "आधुनिक हिंदी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ -पृष्ठ ७

११. डॉ. सच्चिदानंद राय : "हिंदी उपन्यास : सांस्कृति व मानवतावादी चेतना -- पृष्ठ १११

१२. सुरेश सिन्हा : हिंदी उपन्यास — पृ - २५

१३. डॉ. नवल किशोर : मानववाद और साहित्य - पृ. २५.२६.

१४. concluding unscienlitic pist script kiriegaard p-309

१५. encyclopaedia of the social sciences vol 7-8-, p-544

१६. रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त शब्द सागर' पृष्ठ ८४६.

१७ "Ethically,it is the task of every individual to become an entire man " _p-294

१८. concluding unscientific post script -kirkegaard,p-309